पाठ योजना

सूचनात्मक पक्ष :

विद्यालय का नाम	:	टी॰ जी॰ एस॰, उ॰वि॰, जगन्नाथपुर
दिनाङ्क	:	8-8-19
कक्षा	:	नवम्
विषय	:	संस्कृत
उप - विषय	:	कथा (गद्य)
प्रकरण	:	स्वर्ण काक :
कालांश	:	पंचम
समयावधि	:	45 मिनट
छात्राध्यापिका का नाम	:	रागिनी गोस्वामी
परीक्षा क्रमांक	:	18ED7512 82

ज्ञानात्मक पक्ष :

सामान्य उद्देश्य :

1. छात्रों को संस्कृत भाषा के महत्व को बताना।
2. छात्रों की कल्पना - शक्ति का विकास करना।
3. उनकी तर्क - शक्ति का विकास करना।
4. उन्हें संस्कृत के अनूठे कथा - साहित्य से परिचित कराना।
5. छात्रों को स्वरूप मनोरंजन की ओर प्रवृत्त करना।
6. आचार - व्यवहार का ज्ञान प्रदान करते हुए छात्रों को उनके चरित्र - निर्माण में सहायक होना।

विशिष्ट उद्देश्य :

1. छात्रों को 'विश्वकथाशतकम्' की एक लघु - कथा से परिचित

कराना तथा इस बात की जानकारी देना कि लोभ का दुष्परिणाम अत्यन्त दुखदायी होता है।

2. कथा - रचना की प्रवृत्ति को परिष्कृत करना।

3. छात्रों को लोभ और उसके दुष्परिणाम के साथ - साथ त्याग और उसके सुपरिणाम से परिचित कराते हुए उनके चरित्र - निर्माण में सहायक होना।

शिक्षण सहायक - सामग्री : 1. चार्ट पेपर
2. मॉडल
3. ब्लैक - बोर्ड

शिक्षण - विधि : 1. व्याख्या विधि
2. कहानी विधि
3. प्रदर्शन विधि
4. प्रश्नोत्तर विधि

पूर्वज्ञान : छात्रों को स्वर्ण काक : की कथा के संबंध में सामान्य जानकारी है।

प्रस्तावना :—

क्रम सं०	प्रस्तावना के प्रश्न	छात्र संभावित उत्तर
01.	हमलोग आकाश में उड़ने वाले को क्या कहते हैं?	पक्षी
02.	आकाश में हम किन - किन पक्षियों को उड़ते देखते हैं?	कौआ, मैना, तोता।
03.	काले रंग के उड़ने वाले पक्षी को हम क्या कहते हैं?	कौआ

Scanned with CamScanner

उद्देश्य कथन : छात्रों आज हमलोग 'स्वर्ण काक :' शीर्षक के संबंध में अध्ययन करेंगें।

क्रियात्मक पक्ष :
प्रस्तुतीकरण ——

शिक्षण - बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाशीलन
प्रथम अन्विति	पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थालयां तण्डुलान् निक्षिप्य पुत्रीमादिदेश — सूर्यातपे तण्डुलान् रक्षेत्यो रक्ष। किञ्चित्कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तामुपाजगाम।
आदर्श - वाचन	छात्राध्यापिका स्वर का उतार - चढ़ाव करते हुए तन्मयता के साथ आदर्श - वाचन करेंगी।
अनुकरण - वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण वाचन करने को कहेंगीं।
व्याख्या	प्राचीन काल में किसी गाँव में एक गरीब वृद्धा स्त्री रहती थी। उसकी एक विनम्र और सुन्दर पुत्री थी। एक बार माता ने थाली में चावल डालकर पुत्री को आदेश दिया — सूर्य की धूप में चावलों को पक्षियों से रक्षा (रखवाली) करो। कुछ समय के बाद एक विचित्र कौवा उड़कर उसके पास आया।

Scanned with CamScanner

छात्र क्रियाशीलन	श्यामपट्ट कार्य
सभी छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	**सन्धि-विच्छेद :—** 1) न्यवसत् = नि + अवसत् । 2) चासीत् = च + आसीत् । **उत्तर :—** निर्धनाया: वृद्धाया: दुहिता विनम्रा मनोहरा च आसीत्। **काठिन्य-निवारण :—** 1) निक्षिप्य = रखकर । 2) समुड्डीय = उड़कर । 3) उपाजगाम = पास पहुँचा।
छात्र अनुकरण — वाचन करेंगे।	
छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	

Scanned with CamScanner

शिक्षण - बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाशीलन
मौनवाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को मौनवाचन करने को कहेंगी।
विचार विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछेंगी:	छात्राध्यापिका छात्रों से विचार - विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछेंगी। प्रश्न — सन्धि विच्छेद कुरुत - (i) न्यवसत् (ii) चासीत्। प्रश्न — निर्धनापा: वृद्धापा: दुहिता कीदृशी आसीत् ?
द्वितीयावृत्ति	नैतादृश: स्वर्णपक्षो खतचञ्चु: स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्ट:। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत् - तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते। स्वर्ण-पक्ष: काक: प्रोवाच, मा शुच:। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहि: पिप्पल-वृक्षमनु त्वयागन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि। प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।
आदर्श वाचन	छात्राध्यापिका स्वर का उतार - चढ़ाव करते हुए तन्मयता के साथ आदर्श - वाचन करेंगी।
अनुकरण - वाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण वाचन करने को कहेंगी।
व्याख्या	ऐसा सुनहरे पंखों वाला और चाँदी की चोंच वाला सुनहरा कौवा उसके द्वारा पहले नहीं देखा गया था। उसे चावल खाते हुए और हँसते हुए देखकर

Scanned with CamScanner

छात्र क्रियाशीलता	श्यामपट्ट कार्य
छात्र मौनवाचन करेंगे।	
छात्र उत्तर देंगे।	
सभी छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	
छात्र अनुकरण - वाचन करेंगे।	

सन्धि विच्छेद :--

1) तस्याश्चैका
= तस्याः + च + एका।

उत्तर :-
बालिकया पूर्वं स्वर्णपद्मः रजतचञ्चुः स्वर्णशाकः न दृष्टः आसीत्।

उत्तर :--
रुदन्तीं बालिकां काकः आश्वासयत् - हे बालिके! मा शुचः। सूर्योदयात्प्राक् ग्रामात् बहिः पिप्पलं वृक्षम् अनु - त्वया आगन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यम् दास्यामि।

Scanned with CamScanner

शिक्षण – बिन्दु	छात्राध्यापिका क्रियाशीलन
	लड़की ने रोना शुरु कर दिया। उसे रोकती हुई वह प्रार्थना करने लगी – चावलों को मत खाओ। मेरी माता बहुत गरीब है। सुनहरे पंखों वाला कौवा कहने लगा –– दुःख मत करो। सूर्य निकलने से पहले गाँव से बाहर पीपल के पेड़ के पीछे (समीप) तुम आ जाना। मैं तुम्हें चावलों का मूल्य दे दूँगा। खुश ही बालिका को नींद भी नहीं आई।
मौनवाचन	छात्राध्यापिका छात्रों को मौनवाचन करने को कहेंगी।
विचारविश्लेषणात्मक प्रश्न	छात्राध्यापिका छात्रों से विचार – विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछेंगी। प्रश्न –– बालिकया पूर्व किं न दृष्टम् आसीत् ? प्रश्न –– रुदन्ती बालिका काकः कथम् आश्वासयत् ?

पुनरावृत्ति के प्रश्न :—

1. सन्धि विच्छेदं कुरुत —
   (i) न्यवसत (ii) न्यासीत ।
2. निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत् ?

पर्यवेक्षिका का

हस्ताक्षर

छात्र क्रियाशीलन	श्यामपट्ट कार्य
	काठिन्य - निवारण :—
	स्वर्णपक्ष : = सोने का पंख।
	निवारयन्ती = रोकती हुई।
	मा शुच : = दुख मत करो।
	प्रहर्षिता = खुश हुई।
	प्रोवाच = कहा।
	रजत चन्चु = रोकती हुई।
	उपाज गाम = पास पहुँचा।
छात्र मौनवाचन करेंगे	स्थालयाम = थाली में।
	समुड्डीय = उड़कर।
छात्र उत्तर देंगे।	

गृहकार्य :—

1. विलोमपदं लिखत :—

(1) पश्चात्   (3) अधः : = उपरि।

(2) हसितुम्   (4) श्वेत : ।

8.8.19

विषयाध्यापिका का हस्ताक्षर